



Hargharpanditji

॥ श्री विजया एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री विजया एकादशी व्रत कथा ॥

विजया एकादशी का व्रत भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इसका वर्णन स्कन्द पुराण में मिलता है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को सभी कार्यों में विजय प्राप्त होती है, विघ्न दूर होते हैं तथा पापों का नाश होता है। भगवान श्रीराम ने भी लंका विजय से पूर्व इस व्रत का पालन किया था।

विजया एकादशी व्रत कथा

एक समय नैमिषारण्य में विराजमान महर्षि शौनक आदि ऋषियों ने सूत जी से पूछा—

"हे सूत जी! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उसका माहात्म्य और व्रत कथा कृपया बताइए।"

सूत जी बोले—

"हे मुनियों! यह एकादशी विजया एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। इसका माहात्म्य स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था।"

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

जब भगवान श्रीराम माता सीता की खोज में वानर सेना सहित समुद्र तट पर पहुँचे, तब उनके सामने विशाल समुद्र था। उसे पार करने का कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा था। श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा—

"हे लक्ष्मण! इस अथाह समुद्र को पार करने का उपाय बताओ।"

तब लक्ष्मण जी ने विनम्रतापूर्वक कहा—

"हे प्रभु! यहाँ से कुछ दूरी पर महान तपस्वी बकदाल्भ्य ऋषि का आश्रम है। वे त्रिकालदर्शी और परम ज्ञानी हैं। उनसे उपाय पूछना ही उचित होगा।"

भगवान श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण सहित ऋषि के आश्रम पहुँचे।

ऋषि ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया। श्रीराम ने समुद्र पार करने का उपाय पूछा।

बकदालभ्य ऋषि ने कहा—

"हे रघुनंदन! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत कीजिए। इस व्रत के प्रभाव से आपके सभी विघ्न दूर होंगे और आपको निश्चित ही विजय प्राप्त होगी।"

ऋषि ने उन्हें व्रत की संपूर्ण विधि बताई। श्रीराम ने वानर सेना सहित विधिपूर्वक विजया एकादशी का व्रत किया, भगवान विष्णु का पूजन किया तथा द्वादशी के दिन व्रत का पारण किया।

व्रत के प्रभाव से समुद्र देव ने मार्ग प्रदान किया। नल और नील के द्वारा सेतु का निर्माण हुआ और समस्त वानर सेना सुरक्षित रूप से समुद्र पार कर लंका पहुँची। वहाँ भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर माता सीता को मुक्त कराया तथा धर्म की विजय हुई।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो मनुष्य श्रद्धा और नियमपूर्वक विजया एकादशी का व्रत करता है, उसे जीवन के प्रत्येक शुभ कार्य में सफलता प्राप्त होती है। उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और अंत में वह विष्णुलोक को प्राप्त होता है।"

कथा का संदेश

किसी भी शुभ कार्य से पहले भगवान का स्मरण और धर्म का पालन सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

विजया एकादशी का व्रत बाधाओं को दूर कर विजय और सफलता प्रदान करने वाला माना गया है।

श्रद्धा, संयम और भक्ति से किया गया व्रत मनुष्य के आत्मबल और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

भगवान विष्णु की कृपा से असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी सफल हो सकते हैं।

विजया एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु फाल्गुन कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी का व्रत रखकर भगवान श्रीविष्णु की पूजा करता है, वह शत्रुओं पर विजय, कार्यों में सफलता, पापों से मुक्ति, यश, समृद्धि और अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति करता है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ विजया एकादशी व्रत कथा समाप्त ॥

